आधुनिक शिक्षा गुणवत्ता के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

डॉ. शशि सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद

सारांश

मनुष्य विभिन्न मानसिक एवं शारीरिक परिस्थियों के बीच सामंजस्य के बीच ताल मेल बैठाकर अपने समाज तथा राष्ट्र के प्रति अपने उत्तर दायुत्त पूरा करता है। बालक के प्रथम पाठशाला परिवार एवं उसकी प्रथम शिक्षिका उसकी माता को माना गया है। उसके बाद बालक विद्यालय समाज के सामजस्य से अपने व्यक्तित्व आचार विचार में परिवर्तन करते हुए ज्ञान की श्रंखला को आगे बढ़ता फिर प्रश्न यह है। कि बालक को जैसा विद्यालय शैक्षिक भौतिक वातावरण मिलेगा क्या उसी के अनुरूप बालक का विकास होगा इस प्रश्न का उत्तर भूतकाल से लोग ढूढते है। तथा लगभग सभी लोग इस बात से सहमत है।। कि बालक के आसपास के वातावरण से बालक के ज्ञान की श्रखला को आगे बढाने में सहायता होती है। इस कढी में वर्तमान शिक्षा गुणवत्ता के प्रति अभिभावकों की क्या राय है। इसके बारे में क्या राय रखते है। इस सम्बन्ध के बारे में अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशीला है, शिक्षा बालक का सर्वगीव विकास का आधार है शिक्षा गुणवत्ता पर निर्भर करता है। शिक्षा की गुणवत्ता से तात्पर्य जो शिक्षा वर्तमान में दी जा रही है। वह शिक्षा वर्तमान आवश्यकता के अनुसार उस पर कितनी लागू हो रहीहै जो समय परिस्थितियों के अुनसार उस पर लागू हो जो शिक्षा में कई एक प्रकार के कार्य करने पर निर्भर कर सके और शिक्षा को उस स्तर तक ले जाये जहा जो विभिन्न कारको कार्यरता के सम्मिलित प्रभाव से निर्मित होती है। उसको शिक्षा गुणवत्ता कहते है।शिक्षा की गुणवत्ता के प्रमुख आधार में अध्ययन प्रशिक्षण का मुख्य स्थान जो शिक्षा को गुणवता को बढने मे विशेष योग्यदान ह। शिक्षा गुणवत्ता अध्यापक के प्रशिक्षण की गुणवत्ता से ही जो शिक्षा की गुणवत्ता को बढाती है। शिक्षा की गुणवत्ता बढने हेतु पाठयक्रम प्रमुख आधार है जो पाठयक्रम आधुनिककरण राष्ट्रीय कल्याण का उददेश्य छात्रो की आधुनिकशीलता को बढने हेतु और पाठयक्रम मे भाषा मूल्य नैतिकता आदर्श वह सामाजिकता सहित आर्थिक उददेश्य का निर्धारण होता हो व शिक्षा के उददेश्य को निर्धारण करना ही शिक्षा की गुणवता का प्रमुख आधार हेाता है। जो शिक्षा की गुणवताओ निर्धारण करते हुऐ शिक्षण विधि शिक्षण प्रविधियो का प्रयोग , प्रवेश प्रक्रिया का मुख्य अंग मे रूप माना गया है। जो शिक्षा की गुणवता को बढाते है। इन सभी के आधारो प्रमुख आधार के रूप विद्यालीय वातावरण , व शैक्षित वातावरण का निर्माण करना , पाठय सहगामी क्रियाओ का सभी प्रकार हो निधारण करना ही शिक्षा

Vol. 5, Issue: 5, May : 2017
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 -771X

गुणवता के विकास को बढाना है। और शिक्षा की गुणवता मे शिक्षण सस्थानो में मूल्यंकान पद्धति का विशेष योग दान माना जाता है। मूल्यंकान पद्धति के दो प्रयोग होते है। जिसमे सैद्धान्तिक मूल्यांकन व प्रयोगात्मक मूल्यांकन दोनो मूल्यांकन की पद्धतियो का प्रयोग किया जाता है। प्रयेागत्मक मूल्यंकान से बालक व्यवहारिक जीवन का मूल्यंकान होता है। शिक्षा की गुणवता मे अभिभावको का दृष्टि कोण ने शिक्षा की गुणवत्ता ंमें विकास करने मे बल दिया है। वर्तमान अभिभावना शिक्षगुणवत्ता के प्रति सेमिनार प्रयोगशाला अभिभावको की संगोष्टी आदि प्रकार के कार्य क्रम में बढ कर योगदान दे रहे । आज अभिभावको का दृषिकोण में शिक्षा की गुणवत्ता पर विकास से राष्ट्र की प्रगति में विशेष सहयोग किया। अभिभावक की दृष्टिकोण शिक्षा बालक के व्यवहारिक जीवन को कुशल बनाये शिक्षा की गुणवत्ता से समाज गति शीलता सामाजिक प्रगति के साथ आर्थिक नियोजन वे शैक्षिण कार्यो का विकास के साथ राष्ट्र की एकता व भावात्मक एकता को बढता है। शिक्षा की गुणवत्ता बढने से समाज व राष्ट्र का विकास हो। शिक्षा की गुणवत्ता के अनुरूप से राष्ट्र का आधुनिकरण के माध्यम से राष्ट्र निर्माण की सहायता से प्राप्त हो सकता है। शिक्षा गुणवता के पक्ष के एन0 सी0ई0 आर0 टी0 की पुस्तक उभरते भारतीय अध्यापक शिक्षा की पाठय–पुस्तक (1991) इस प्रसंग मे विचार दिये । शिक्षा की गुणवता मे सुधार एक सतत प्रक्रिया है। यह कभी नही कहा जा सकता कि शिक्षा गुणवत्ता के अतिम चरण मे पहुँच गयी है। और उसमे अधिक सुधार न सम्भव है न अपेक्षित। इस बात पर भी ध्यान देना आवश्यक है। कि शिक्षा की गुणवत्ता मे सुधार लाना एक धीमी और क्रमिक प्रक्रिया है। वबपंस क्मजमतउपदंजमे वित थ्नजनतम प्दकपंद भ्पहीमत म्कनबंजपवद जो रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली की एक सेमीनार मे प्रस्तुत लेखक ने मार्च 1999 मे प्रस्तुत किया था लेखक ने यह कहा था कि जैसे किसी व्यक्ति का स्वस्थय या उसकी सुन्दरता कई कारको का सम्मिलित प्रभाव होता है। जैसे ही शिक्षा की गुणवत्ता भी शिक्षा में कई कारको के कार्य करने पर निर्भर होती है। शाहिद उस्मानी ने अपने लेख गुणवत्ता शिक्षा जो जामिया मिलिया इस्लातिया के प्म्ं (शिक्षा विभाग) द्वारा प्रकाशित पुस्तक म्समतबदजंतल मकनबंजपवद ंदक जीम जंबीमत (1997) मे आज की आवश्यकता है। कि कुछ विशेष धनात्मक दृष्टि कोणो मूल्यो और प्रभावशाली सोच प्रक्रिया का अपनाया जाये। पूर्व में किये गये शोध से सम्बन्धित अध्ययन के लिए, सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन केलिए सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का प्रयास कया गया है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के भारतीय अध्ययन व जर्नल्स का अध्ययन किया हैः–भटनागर एम० 1979 लौलीथा एम०एस० 1981 जोशी ए०एन०1984 कडवडकड एस०डी० 1984 माथुर एस० 1987 वशिष्ट के० के० 1989 इनका उद्देश्य था –छात्र शिक्षकों की क्षमता अध्ययन पर शिक्षण कौशल का एकीकृत करने के लिये प्रशिक्षण की एक रणनीति की प्रभावशीलता ,प्रदर्शन के आधार पर विकसित करने हेतु एक शिक्षण कौशल समूह का तुलनात्मक अध्ययन । पाया गया शिक्षकों की नियमित बाते व विद्यार्थियों की नियमित बातो की दरे स्थिर बात नियोजन के समय – समय आयाम के आकलन के लिए उपयोग और स्थिर प्रतीत होती है। शिक्षण के लिय योजना क्षमता व शिक्षण और परीक्षण क्षमतओं के कुछ घटको से सम्बन्धित सैद्धान्तिक प्रायोगिक कार्य या तो निर्धरित नही था । उसे अपेक्षित महत्व नही दिया गया।

अध्ययन की आवश्यकता

माध्यमिक स्तर के विद्यालय मे शिक्षा गुणवत्ता की रूप रेखा के रूप मे माध्यमिक विद्यालय की

शिक्षा ही उच्च शिक्षा आधारशीला है। माध्यमिक विद्यालय की शिक्षा की गुणवत्ता के रूप मे पाठय क्रम मे गुणवत्ता रूप प्रयुक्त होनी चाहिये – जो शिक्षा की गुणवत्ता का अभिलन किया जाता है। शिक्षा मे नवचार को लाना शिक्षको मे प्रशिक्षण के पाठय क्रम का निधारण से शिक्षा की गुणवत्ता का निधारण होता है। सामाजिक रूप रेखा के रूप सामाजिक जाटिल तो को दूर करना शैक्षिण जलवायु शिक्षा के क्षेत्र विद्यालयो वातावरण के रूप मे व शिक्षा को क्रम व्यवहार व प्रधान चार्य के कार्य कुशलता नेतृत्व कुशलता से शिक्षा की गुणवत्ता रूप रेखा कन निधारण होता है।

अध्ययन की समस्या

वर्तमान शिक्षा गुणवत्ता के प्रति अभिभावको के दृष्टिकोण का अध्ययन

अध्ययन के उददेश्य

1. वर्तमान शिक्षा गुणवत्ता के प्रति पुरूष अभिभावको के दृष्टि कोण का अध्ययन
2. वर्तमान शिक्षा गुणवत्ता के प्रति महिला अभिभावको के दृष्टिकोण का अध्ययन
3. वर्तमान शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति पुरूष एवं महिला अभिभावको के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनायें

वर्तमान शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति पुरूष एवं महिला अभिभावको के दृष्टिकोण मे कोई सार्थक अन्तर नही होगा ।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन को पूर्ण करने के लिए सवक्षण की विश्लेषणात्मक विधि के चरणो का अनुरूप किया गया है।

शोध अभिकल्प

इस अध्ययन को पूर्ण करने हेतु दो स्थायी समूह अभिकल्प की प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है।

जनसंख्या/न्यादर्श

मेरठ शहर के माध्यमिक स्तर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिभावकों को इस अध्ययन की जनसंख्या मानते हुये 10 माध्यमिक विद्यालयों को यादृच्छिक विधि से चयनित किया गया प्रत्येक विद्यालय से 5 पुरूष 5 महिला अभिभावकों उद्देश्य पूर्ण न्यादर्श से चयनित कर 100 अभिभावकों को चयन कर यह अध्ययन पूर्ण किया गया ।

सारणी 1 वर्तमान शिक्षा गुणवत्ता के प्रति पुरूष अभिभावकों का दृष्टिकोण का अध्ययन

गुणवत्ता के कारक	पूर्ण सहमत प्रतिशत	कुल सहमत प्रतिशत	सहमत का पूर्ण प्रतिशत	अनिश्चित का प्रतिशत	असहमत का प्रतिशत	पूर्ण असहमत का प्रतिशत	कुल असहमत का पूर्ण प्रतिशत
शिक्षा के गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	32.8:	28.4:	61.2 :	16.6:	12.0:	10.2:	22.2 :
विषय की गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	26.0:	25.0:	51:	24.0:	11.0:	14.0:	25:
प्रशासनिक गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	33.8:	30.0:	63.8 :	16.3:	10.7:	9.2:	19.9:
भौतिक गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	19.3:	29.6:	48.9 :	16.1:	15.0:	20.0:	35.0:
व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगिता के प्रति दृष्टिकोण	34.0:	30.0:	64.0 :	16.6:	10.0:	9.4:	19.4:
मूल्यांकन के गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	32.0:	30.0:	62.0 :	24.0:	10.0:	4.0:	14.0:

उपरोक्त सारणी के माध्यम से अध्ययनकर्ता ने शिक्षा गुणवत्ता को छह भागों में विभाजित कर पुरूष अभिभावकों के दृष्टि कोण को 5 बिन्दुओं पूर्ण सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, एवं पूर्ण सहमत पर विचारों की प्रतिशतता उपरोक्त सारणी में दर्शायी गयी है।

सहमत की प्रतिशत शिक्षा शिक्षा गुणवत्ता के प्रति 61.2 विषय की गुणवत्ता के प्रति 51 प्रशासनिक गुणवत्ता के प्रति 63.8 भातिक गुणवत्ता के प्रति 48.9 व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगी 64 तथा मूल्यांकन की गुणवत्ता के प्रति 62 प्रतिशत है।

जिसमें पाया गया है। कि व्यवहारिक जीवन के लिये उपयोगिता प्रश्सनिक गुणवत्ता मूल्यकांन की गुणवत्ता व शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति उच्च दृष्टिकोण पाया गया तथा विषय की गुणवत्ता तथा भौतिक गुणवत्ता के प्रति सामान्य दृष्टिकोण पाया गया ।

सारणी 2 वर्तमान शिक्षा गुणवत्ता प्रति महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

गुणवत्ता के कारक	पूर्ण सहमत प्रतिशत	कुल सहमत प्रतिशत	सहमत का पूण प्रतिशत	अनिश्चित का प्रतिशत	असहमत का प्रतिशत	पूर्ण असहमत का प्रतिशत	कुल असहमत का पूर्ण प्रतिशत
शिक्षा के गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	40.0:	36.0:	76.0:	13.46:	7.33:	3.3:	10.63:
विषय की गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	24.0:	36.0:	60.0:	18.0:	13.0:	9.0:	22.0:
प्रशासनिक गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	29.6:	24.9:	54.5:	19.0:	16.0:	10.5:	26.5:
भौतिक गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	28.3:	36.0:	62:	18.3:	13.1:	9.3:	20.0:
व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगिता के प्रति दृष्टिकोण	28.3:	26.1:	54.4:	19.6:	16.3:	9.7:	26.0:
मूल्यांकन के गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	30:	22:	42:	18:	28:	10:	40:

उपरोक्त सारणी के माध्यम से अध्ययनकर्ता ने शिक्षा गुणवत्ता को छह भागों में विभाजित कर महिला अभिभावकों के दृष्टि कोण को 5 बिन्दुओं पूर्ण सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, एवं पूर्ण सहमत पर विचारों की प्रतिशतता उपरोक्त सारणो में दर्शायी गयी है। सहमत की प्रतिशत शिक्षा शिक्षा गुणवत्ता के प्रति 76 विषय की गुणवत्ता के प्रति 60 प्रशासनिक गुणवत्ता के प्रति 54.5 भौतिक गुणवत्ता के प्रति 59.3 व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगी 54.4 तथा मूल्यांकन की गुणवत्ता के प्रति 52 प्रतिशत है।

उपरोक्त सारणी के माध्म से वर्तमान शिक्षा गुणवत्ता के प्रति महिला अभिभवकों के दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है। जिसमें पाया गया शिक्षा की गुणवत्ता व भौतिक गुणवत्ता के प्रति उच्च दृष्टिकोण पाया गया तथा विषय की गुणवत्ता प्रशानसनिक गुणवत्ता व्यवहारिक जीवन के लिय उपयोगिता मूल्यंकान के गुणवत्ता के प्रति सामान्य दृष्टिकोण पाया गया ।

सारणी 3 वर्तमान शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति पुरूष एवं महिला अभिभावक के सार्थकता अन्तर परिणाम

गुणवत्ता के कारक	पुरूष अभिभावक महिला अभिभावकं	संख्या	सहमत प्रतिशत	प्रमाणित विचलन त्रुटि	टी पाप्तांक	सार्थकता परिणाम
शिक्षा के गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	पुरूष	50	61.2	9.28	1.59	'नहीं
	महिला	50	76			
विषय की गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	पुरूष	50	51	9.93	0.906	'नहीं
	महिला	50	60			
प्रशासनिक गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	पुरूष	50	63.8	9.83	0.94	'नहीं
	महिला	50	54.5			
भौतिक सुविधाओं गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	पुरूष	50	48.9	9.96	1.044	'नहीं
	महिला	50	59.3			
व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगिता के प्रति दृष्टिकोण	पुरूष	50	64	9.82	0.97	'नहीं
	महिला	50	54.4			
मूल्यांकन के गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	पुरूष	50	62	9.90	1.010	'नहीं
	महिला	50	52			

स्वतन्त्रता अंश 98 सार्थकता स्तर '0.05 के साराणी मान (1.97)

उपरोक्त साराणी के माध्यम से अध्ययनकर्ता के वर्तमान शिक्षा गुणवत्ता के प्रति पुरूष अभिभावक एवं महिला अभिभावक के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए अन्तर की सार्थकता की जांच की गयी है।

जिससे शिक्षा के गुणवत्ता को 6 कारक शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण विषय की गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण, प्रशासनिक गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण, भौतिक सुविधाओं गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण, व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगिता की गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण में पुरूष अभिभावक एवं महिला अभिभावक के मध्य अन्तर की सार्थकता के लिए टी प्राप्तांक की गणना की गई है जिसमें टी का गणनात्मक मान स्वतन्त्रता अंश 98 सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.97 से कम है। अध्ययनकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुंचा है वर्तमान शिक्षक गुणवत्ता के प्रति महिला एंव पुरूष अभिभवकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नही है।

निष्कर्ष

आकडों के विश्लेषण के उपरान्त अध्ययनकर्ता ने यह पाया कि वर्तमान शिक्षा गुणवत्ता अभिभावकों के दृष्टिकोण कुछ परिस्थितियो में उच्च स्तर कुछ परिस्थितियों में निम्न स्तर पाया गया जिसमें विषय की गुणवत्ता भौतिक स्थिति की गुणवत्ता के प्रति महिला अभिभावकों का दृष्टिकोण उच्च गुणवत्ता की स्थिति के रूप में प्राप्त हुआ तथा पुरूष अभिभावकों का प्रशासनिक गुणवत्ता मूल्यंकान की गुणवत्ता एवं व्यवहारिक जीवन की उपयोगिता के लिये उच्च गुणवत्ता का स्तर पाया गया । जिससे स्पष्ट है। गुणवत्ता के प्रति पुरूष एवं महिला अभिभावकों के सहमत के प्रति कारको में विभिन्नता है। अर्थात महिला एवं पुरूष अभिभावकों शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अलग– अलग पैमाना रखते है। तथा किस कारक की गुणवत्ता की स्थिति खराब है। इसके प्रति सहमती एक समान नही रखते है। अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने में यह प्राप्त हुआ कि गुणवत्ता के प्रति महिला एवं पुरूष अभिभवकों मे कोई सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. वर्तमान शिक्षा गुणवत्ता के प्रति बढने हेतु अभिभावको के सेमिनार का योजन प्रत्येक संख्या द्वारा किया जाना चाहिये जिससे वह शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति जागरूकता बढे तथा गुणवत्ता में बढे सकें ।
2. शिक्षा गुणवत्ता के प्रति बढने हेतु शिक्षण व अभिभावकों सम्बन्द में मधुरता को जाना जिससे अभिभावक बच्चों की शिक्षा पर ध्यान दे ।
3. शिक्षा गुणवत्ता गिरवात में कमी करने हेतु शिक्षण छात्रो की उपस्थित पर ध्यान दे ।
4. विद्याार्थियों की आवश्यता के अनुरूप शैक्षिक सामग्री की व्यवस्था पर अभिभावक ध्यान दे
5. विद्यार्थियों की परीक्षामूल्यकांकन प्रणाली पर अभिभावक ध्यान दे ।

सन्दर्भ गन्थ सूची

1. कुलश्रेष्ठ, एस. पी. (2005) शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार , आगरा –2 : विनोद पुस्तक मन्दिर।
2. गुप्ताा, एस. पी. एवं गुप्ता अलका (2010). साँख्यिकीय विधियाँ , इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
3. मंगल, एस. के. एवं मंगल शुभ्रा (2006), शैक्षिक तकनीकी के मूलतत्व एंव प्रबन्धन मेरठः लायक बुक डिपो।
4. पाण्डेय, रामशक्ल, (2007). शिक्ष के दार्शनिक सिद्धान्त, आगरा –7 : अग्रवाल पब्लिकेशन।
5. रूहेला ,एस. पी. (2005). विकासोन्युख भारतीय समाज में शिक्षण और शिक्षा आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन।
6. शर्मा आर. ए. (2006). भारतीय शिक्षा प्राणली का विकास मेरठ : आर०लाल बुक डिपो।
7. शुक्ला, के. के., परिहार, ए. जे. एस. एवं सिंह, क.पी. (2011). शिक्षा के दर्शनिक तथा समाज शास्त्रीय आधार मेरठ आर०लाल बुक डिपो।